Dr. Pankaj Kumar Yadav

भारत में श्रम शक्ति का विभिन्न क्षेत्रों में विभाजन (Composition distribution amongst different sectors of employment) :-

भारत में रोजगार के क्षेत्रों श्रमशक्ति विभाजन निम्न प्रकार से की गई है।

सारणी 1 = भारत में रोजगार के क्षेत्रों में श्रमशक्ति विभाजन

वर्ष	प्राथमिक क्षेत्र	द्वितीयक क्षे.	सेवा क्षेत्र	कुल
1901	71.8	12.6	15.6	100
1951	72.1	12.6	17.3	100
1961	71.8	11.6	16.6	100
1971	71.1	12.2	16.7	100
1981	68.7	13.5	17.8	100
1991	66.8	12.7	20.5	100
2000	64.9	13.6	31.5	100

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पिछले 100 वर्ष के दौरान देश के व्यावसायिक ढांचे में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। प्राथमिक क्षेत्र के अनुपात थोड़ी कमी और द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में थोड़ी वृद्धि होने की प्रवृत्ति नजर आने लगी है लेकिन परिवर्तन की गति निःसंदेह बहुत धीमी है।

श्रमशक्ति का कार्यशील जनसंख्या का विभिन्न उत्पादन क्रियाओं के विवरण को व्यावसायिक ढांचा कहते हैं। मोटे तौर से श्रमशक्ति का विभाजन तीन क्षेत्रों में किया जाता है (अ) प्राथमिक क्षेत्र (ब) द्वितीयक क्षेत्र (स) सेवा क्षेत्र। जैसे-जैसे आर्थिक विकास होता जा रहा है वैसे वैसे प्राथमिक उद्योगों में लगे व्यक्तियों का अनुपात घटता जाता है और द्वितीयक व सेवा क्षेत्रों में लगे व्यक्तियों का अनुपात बढ़ता जाता है।

(i) प्रारंभिक क्षेत्र का प्रमुख (Predominance of Primary Sector) :-
भारत के व्यावसायिक ढांचे से उसकी अर्थव्यवस्था का पिछड़ापन स्पष्ट करता है क्योंकि भारत की 66.8 प्रतिशत से अधिक कार्यशील जन संख्या कृषि और सम्बद्ध व्यवसायों में कर रही है। यह अनुपात 90 वर्षों में इसी स्तर पर लगभग स्थिर है।

(ii) द्वितीयक क्षेत्र (Marginal increase in secondary sector) :-

सन 1951 में देश की कार्यशील जनसंख्या का 10.5 प्रतिशत भाग द्वितीयक क्षेत्र में कार्यरत था जो बढ़कर 1991 ई० 12.7 प्रतिशत हो

Date ....

भारत में श्रम शक्ति (Labour force in India)

भारत में श्रम शक्ति का अध्ययन हम निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं :-

(1) श्रम शक्ति (i) कुल श्रमशक्ति
(ii) श्रमशक्ति का शैक्षणिक संयोजन
(iii) श्रम शक्ति सहभागिता दर
(iv) भारत में श्रमशक्ति का विभिन्न क्षेत्रों में विभाजन
(v) वृद्ध आयु के अनुसार श्रमशक्ति का विभाजन
(vi) श्रमशक्ति सहभागिता दरों क्षेत्रीय अंतर
(vii) असंगठित क्षेत्रों में श्रम शक्ति

भारत में श्रमशक्ति की व्यावसायिक संरचना के स्थैतिक बने रहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कारण संक्षेप में निम्नलिखित हैं :—

(i) श्रमशक्ति में तीव्र वृद्धि (Rapid increase in Labour force): विगत वर्षों में भारत में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण कृषि क्षेत्र पर श्रमशक्ति का दबाव बढ़ा है।

(ii) कृषि में सीमित तकनीकी प्रगति (Limited Technological progress in agriculture): व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन लाने के लिए श्रम उत्पादकता में तेजी से वृद्धि नहीं हो पायी है।

(iii) दोषपूर्ण औद्योगिक नीति (Defective industrial policy): हमारी योजनाओं पूंजी-प्रधान उद्योगों का विकास एवं आयातित मशीनरी के कारण प्रत्यक्ष रोजगार का सृजन बहुत कम हो पाया है।

(iv) दोषपूर्ण रोजगार नीति (Defective employment policy): योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर एवं लघु उद्योगों को वांछित प्रोत्साहन नहीं दिया गया, फलतः रोजगार की मात्रा बढ़ाने में कोई विशेष सफलता नहीं मिली।

(v) निर्यात नीति (Export Policy): अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्मित वस्तुओं एवं सेवाओं के क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण हम अपनी वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात नहीं बढ़ा पाये हैं। परिणाम स्वरूप भारत को घरेलू बाजार पर ही अधिक निर्भर रहना पड़ता है। इस दृष्टि से द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र का बहुत अधिक विस्तार संभव नहीं हो पाया है।

30/04/2020

L.S.W (B.A Honus) Paper I
Part I

(1)

Dr Pankaj Kumar Yadav
Department L.S.W
S.N.S.R.K. College
Saharsa

8 Q. Define :- Indian labour force: Composition distribution among deffrent sectors of employment, charactistics of Indian Labour mobility of Labour

Ans:- श्रमशक्ति से आशय उन समस्त व्यक्तियों के उन समूह से है जो कार्य करते हैं या कार्य करने की इच्छा रखते हैं और योग्यता रखते हैं किन्तु उन्हें कार्य का अवसर नहीं मिलता यद्यपि इसके लिए वे सदा प्रयत्नशील रहते हैं। एल. जी. रेनाल्डस के शब्दों में, किसी व्यक्ति को उस समय श्रम शक्ति में सम्मिलित समझना चाहिए, यदि वह कार्य करने में समर्थ और या तो कहीं काम करता हो अथवा सक्रिय रूप से कार्य की खोज में हो। "किसी देश की सम्पूर्ण जनसंख्या श्रमशक्ति नहीं माना जा सकता बल्कि जनसंख्या का केवल वही भाग प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक क्रियाओं में, सहयोग देता है, श्रम शक्ति या कार्य शक्ति कहलाता है। इसे कार्यशील जनसंख्या भी कहा जाता है। साधारणतया आधुनिक समाज में 15 वर्ष से कम आयु वाले 60 वर्ष से अधिक उम्र वाले लोग उत्पादक क्रियाओं में भाग नहीं लेते हैं, लेकिन उन्हें श्रम शक्ति में सम्मिलित नहीं किया जाता है। अतः वर्तमान समय में केवल 15 से 60 वर्ष के बीच के आयु को लोगों को श्रमशक्ति में सम्मिलित किया जाता है।

श्रमशक्ति या कार्य सहभागिता दर (Labour force or Work Participation Rate) कार्य या श्रम सहभागिता दर से तात्पर्य कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या के अनुरूप से है अर्थात

$$\text{कार्य सहभागिता दर} = \frac{\text{श्रमशक्ति या कार्यशील जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

कार्यसहभागिता दर श्रम शक्ति की आयु, लिंग, शैक्षणिक स्तर काम करने इच्छा आदि तत्वों पर निर्भर करती है। कार्य सहभागिता दर जितनी अधिक होगी, उत्पादन एवं आर्थिक विकास उतना ही तीव्र होगा।

यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि श्रमशक्ति की प्रचुरता को ही शक्ति का प्रतीक नहीं माना जा सकता। श्रम के संख्यात्मक पहलू की अपेक्षा उसका गुणात्मक पहलू अधिक महत्व रखता है। यदि जनसंख्या में अधिकता के साथ-साथ श्रम दक्ष व योग्य हो और उसकी उत्पादन कुशलता अधिक हो तो निश्चय ही राष्ट्र की एक अमूल्य सम्पदा होगी।